

रविवार 28 सितंबर, 2025

## विषय — वास्तविकता

स्वर्ण पाठः यशायाह 33 : 20

" हमारे पर्व के नगर सिख्योन पर दृष्टि कर! तू अपनी आंखों से यरूशेलम को देखेगा, वह विश्राम का स्थान, और ऐसा तम्बू है जो कभी गिराया नहीं जाएगा, जिसका कोई खूंटा कभी उखाड़ा न जाएगा, और न कोई रस्सी कभी टूटेगी। "

उत्तरदायी अध्ययनः यशायाह 35 : 1-7, 10

- <sup>1</sup> जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे, मरूभूमि मगन हो कर केसर की नाई फूलेगी.
- <sup>2</sup> वह अत्यन्त प्रफुल्लित होगी और आनन्द के साथ जयजयकार करेगी। उसकी शोभा लबानोन की सी होगी और वह कर्मेला और शारोन के तुल्य तेजोमय हो जाएगी। वे यहोवा की शोभा और हमारे परमेश्वर का तेज देखेंगे॥
- <sup>3</sup> ढीले हाथों को दृढ़ करो और थरथराते हुए घुटनों को स्थिर करो।
- <sup>4</sup> घबराने वालों से कहो, हियाव बान्धो, मत डरो! देखो, तुम्हारा परमेश्वर पलटा लेने और प्रतिफल देने को आ रहा है। हां, परमेश्वर आकर तुम्हारा उद्धार करेगा॥
- <sup>5</sup> तब अन्धों की आंखे खोली जाएंगी और बहिरों के कान भी खोले जाएंगे.
- <sup>6</sup> तब लंगड़ा हरिण की सी चौकड़ियां भरेगा और गूंगे अपनी जीभ से जयजयकार करेंगे। क्योंकि जंगल में जल के सोते फूट निकलेंगे और मरूभूमि में नदियां बहने लगेंगी
- <sup>7</sup> मृगतृष्णा ताल बन जाएगी और सूखी भूमि में सोते फूटेंगे; और जिस स्थान में सियार बैठा करते हैं उस में घास और नरकट और सरकण्डे होंगे॥
- <sup>10</sup> और यहोवा के छुड़ाए हुए लोग लौटकर जयजयकार करते हुए सिख्योन में आएंगे; और उनके सिर पर सदा का आनन्द होगा; वे हर्ष और आनन्द पाएंगे और शोक और लम्बी सांस का लेना जाता रहेगा॥

पाठ उपदेश

### बाइबल

#### 1. मरकुस 1 : 1, 14 (यीशु), 15

- <sup>1</sup> मेरे दास को देखो जिसे मैं संभाले हूं, मेरे चुने हुए को, जिस से मेरा जी प्रसन्न है; मैं ने उस पर अपना आत्मा रखा है, वह अन्यजातियों के लिये न्याय प्रगट करेगा।
- <sup>14</sup> यूहन्ना के पकड़वाए जाने के बाद यीशु ने गलील में आकर परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार किया।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिपचरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

- 15 और कहा, समय पूरा हुआ है, और परमेश्वर का राज्य निकट आ गया है; मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो॥

## 2. लूका 17 : 11-21

- 11 और ऐसा हुआ कि वह यरूशलेम को जाते हुए सामरिया और गलील के बीच से होकर जा रहा था।  
12 और किसी गांव में प्रवेश करते समय उसे दस कोढ़ी मिले।  
13 और उन्होंने दूर खड़े होकर, ऊंचे शब्द से कहा, हे यीशु, हे स्वामी, हम पर दया कर।  
14 उस ने उन्हें देखकर कहा, जाओ; और अपने तई याजकों को दिखाओ; और जाते ही जाते वे शुद्ध हो गए।  
15 तब उन में से एक यह देखकर कि मैं चंगा हो गया हूं, ऊंचे शब्द से परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ लौटा।  
16 और यीशु के पांवों पर मुंह के बल गिरकर, उसका धन्यवाद करने लगा; और वह सामरी था।  
17 इस पर यीशु ने कहा, क्या दसों शुद्ध न हुए? तो फिर वे नौ कहां हैं?  
18 क्या इस परदेशी को छोड़ कोई और न निकला, जो परमेश्वर की बड़ाई करता?  
19 तब उस ने उस से कहा; उठकर चला जा; तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है॥  
20 जब फरीसियों ने उस से पूछा, कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा? तो उस ने उन को उत्तर दिया, कि परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप से नहीं आता।  
21 और लोग यह न कहेंगे, कि देखो, यहां है, या वहां है, क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है॥

## 3. मत्ती 12 : 22-28

- 22 तब लोग एक अन्धे-गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उस ने उसे अच्छा किया; और वह गूंगा बोलने और देखने लगा।  
23 इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, यह क्या दाऊद की सन्तान का है?  
24 परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।  
25 उस ने उन के मन की बात जानकर उन से कहा; जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा।  
26 और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य क्योंकर बना रहेगा?  
27 भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहायता से निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे।  
28 पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।

## 4. मत्ती 13 : 1-3 (से 2nd ), 31 (यह), 32, 45, 46

- 1 उसी दिन यीशु घर से निकलकर झील के किनारे जा बैठा।

- <sup>2</sup> और उसके पास ऐसी बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़ गया, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही।  
<sup>3</sup> और उस ने उन से दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कही, कि देखो, एक बोने वाला बीज बोने निकला।  
<sup>31</sup> कि स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया।  
<sup>32</sup> वह सब बीजों से छोटा तो है पर जब बढ़ जाता है तब सब साग पात से बड़ा होता है; और ऐसा पेड़ हो जाता है, कि आकाश के पक्षी आकर उस की डालियों पर बसेरा करते हैं॥  
<sup>45</sup> फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था।  
<sup>46</sup> जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उस ने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया॥

## 5. प्रकाशित वाक्य 1 : 1

- <sup>1</sup> यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य जो उसे परमेश्वर ने इसलिये दिया, कि अपने दासों को वे बातें, जिन का शीघ्र होना अवश्य है, दिखाए: और उस ने अपने स्वर्गदूत को भेज कर उसके द्वारा अपने दास यूहन्ना को बताया।

## 6. प्रकाशित वाक्य 21 : 1-4, 10, 11, 23-27

- <sup>1</sup> फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।  
<sup>2</sup> फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्लिन के समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो।  
<sup>3</sup> फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का परमेश्वर होगा।  
<sup>4</sup> और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं।  
<sup>10</sup> और वह मुझे आत्मा में, एक बड़े और ऊंचे पहाड़ पर ले गया, और पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया।  
<sup>11</sup> परमेश्वर की महिमा उस में थी, ओर उस की ज्योति बहुत ही बहुमूल्य पत्थर, अर्थात् बिल्लौर के समान यशब की नाई स्वच्छ थी।  
<sup>23</sup> और उस नगर में सूर्य और चान्द के उजाले का प्रयोजन नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उस में उजाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है।  
<sup>24</sup> और जाति जाति के लोग उस की ज्योति में चले फिरेंगे, और पृथ्वी के राजा अपने अपने तेज का सामान उस में लाएंगे।  
<sup>25</sup> और उसके फाटक दिन को कभी बन्द न होंगे, और रात वहां न होगी।  
<sup>26</sup> और लोग जाति जाति के तेज और विभव का सामान उस में लाएंगे।  
<sup>27</sup> और उस में कोई अपवित्र वस्तु था घृणित काम करनेवाला, या झूठ का गढ़ने वाला, किसी रीति से प्रवेश न करेगा; पर केवल वे लोग जिन के नाम मेम्ने के जीवन की पुस्तक में लिखे हैं॥

## 7. प्रकाशित वाक्य 22 : 21

<sup>21</sup> प्रभु यीशु का अनुग्रह पवित्र लोगों के साथ रहे। आमीन॥

### विज्ञान और स्वास्थ्य

#### 1. 335: 27-31

वास्तविकता आध्यात्मिक, सामंजस्यपूर्ण, अपरिवर्तनीय, अमर, दिव्य, शाश्वत है। कुछ भी अनपेक्षित वास्तविक, सामंजस्यपूर्ण या शाश्वत नहीं हो सकता। पाप, बीमारी और मृत्यु दर आत्मा के दमन विरोधी हैं, और वास्तविकता के विरोधाभास होने चाहिए।

#### 2. 590: 1-3

पदार्थ नश्वर मन की आदिम मान्यता है, क्योंकि इस तथाकथित मन का आत्मा के प्रति कोई संज्ञान नहीं है। नश्वर मन के लिए, सामग्री पर्याप्त है, और बुराई वास्तविक है। नश्वर की तथाकथित इंद्रियां भौतिक हैं। इसलिए नश्वर का तथाकथित जीवन सामग्री पर निर्भर है।

#### 3. 560: 10-15

स्वर्ग के राज्य। दिव्य विज्ञान में सामंजस्य की प्रबलता; अनियंत्रित, शाश्वत और सर्वशक्तिमान मन के दायरे; आत्मा का वातावरण, जहाँ जीवाश्म सर्वोच्च है।

#### 4. 592: 18-20

नया यरूशलेम। दिव्य विज्ञान; ब्रह्माण्ड के आध्यात्मिक तथ्य और सामंजस्य; स्वर्ग का राज्य, या सामंजस्य का राज्य।

#### 5. 572: 19-22

प्रकाशित वाक्य 21: 1 में हमने पढ़ा:

फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।

#### 6. 573: 19 (सेंट जॉन्स)-16

क्योंकि स्वर्ग और पृथ्वी के सेंट जॉन के प्रति शत्रुता गायब हो गई थी, और इस झूठे अर्थ के स्थान पर आध्यात्मिक भावना थी, व्यक्तिपरक स्थिति जिसके द्वारा वह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी को देख सकता था, जिसमें आध्यात्मिक विचार और वास्तविकता की चेतना शामिल है। यह निष्कर्ष निकालने के लिए शास्त्र सम्मत अधिकार है कि इस अस्तित्व की वर्तमान स्थिति में पुरुषों के लिए यह संभव है, और - यह कि हम यहाँ, और अब, मृत्यु, दुःख और पीड़ा के निवारण के लिए सचेत हो सकते हैं। यह वास्तव में पूर्ण क्रिश्चियन साइंस का पूर्वज है। दिल थाम लो, प्रिय पीड़ित, इस वास्तविकता के लिए निश्चित रूप से कुछ समय में और किसी तरह दिखाई देगा। अधिक दर्द नहीं होगा, और सभी आँसू मिटा दिए जाएंगे। जब आप इसे पढ़ते हैं, तो यीशु के शब्दों को याद रखें, "का राज्य तुम्हारे बीच में है॥" यह आध्यात्मिक चेतना इसलिए एक वर्तमान संभावना है।

रहस्योद्घाटनकर्ता एक अन्य दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करता है, जो थके हुए तीर्थयात्री को सांत्वना देने के लिए अनुकूलित है, जो "पूरे रास्ते ऊपर की ओर" यात्रा कर रहा है।

वह प्रकाशितवाक्य 21.9 में लिखता है:—

फिर जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात पिछली विपत्तियों से भरे हुए सात कटोरे थे, उन में से एक मेरे पास आया, और मेरे साथ बातें कर के कहा; इधर आ: मैं तुझे दुल्हिन अर्थात् मेम्ने की पत्नी दिखाऊंगा।

सत्य की यह सेवकाई, ईश्वरीय प्रेम का यह संदेश, यूहन्ना को आध्यात्मिक रूप से ऊपर ले गया। इसने उसे तब तक ऊँचा उठाया जब तक कि वह अस्तित्व के आध्यात्मिक तथ्यों और "नए यरूशलेम, जो परमेश्वर की ओर से, स्वर्ग से उतर रहा है" के प्रति सचेत नहीं हो गया - आनंद और महिमा का आध्यात्मिक प्रवाह, जिसका वर्णन वह उस शहर के रूप में करता है जो "चारों ओर फैला हुआ है।"

## 7. 575: 7-7 अगला पृष्ठ

यह पवित्र शहर, जिसका वर्णन प्रकाशित वाक्य (21:16) में इस प्रकार किया गया है कि यह "चौकोर पड़ा हुआ है" और "ईश्वर से नीचे, स्वर्ग से नीचे" आता है, दिव्य विज्ञान के प्रकाश और महिमा का प्रतिनिधित्व करता है। इस नये यरूशलेम का निर्माता और रचयिता परमेश्वर है, जैसा कि हम इब्रानियों की पुस्तक में पढ़ते हैं; और यह "एक ऐसा नगर है जिसकी नींव है।" यह वर्णन रूपकात्मक है। आध्यात्मिक शिक्षा हमेशा प्रतीकों द्वारा होनी चाहिए। क्या यीशु ने राई के दाने और उड़ाऊ पुत्र के माध्यम से जो सत्य सिखाए थे, उन्हें स्पष्ट नहीं किया? रूपकात्मक अर्थ में, चौकोर नगर के वर्णन का गहरा अर्थ है। हमारे नगर की चार भुजाएँ वचन, मसीह, ईसाई धर्म और दिव्य विज्ञान हैं; "और इसके द्वार दिन में कभी बंद न होंगे, क्योंकि वहाँ रात नहीं होगी।" यह नगर पूरी तरह से आध्यात्मिक है, जैसा कि इसकी चार भुजाएँ दर्शाती हैं।

जैसा कि भजनकार कहते हैं, "उत्तर दिशा में सिय्योन पर्वत, जो अपनी स्थिति के लिए सुन्दर और समस्त पृथ्वी के आनंद का स्रोत है, महान राजा का नगर है।" यह वास्तव में आत्मा का नगर है, सुंदर, राजसी और चौकोर। उत्तर की ओर, इसके द्वार ध्रुव तारे, वचन, रहस्योद्घाटन के ध्रुवीय चुंबक की ओर खुलते हैं; पूर्व की ओर, उस तारे की ओर, जिसे पूर्व के ज्ञानियों ने देखा था, जो उसके पीछे यीशु के चरनी तक गए थे; दक्षिण की ओर, सुखद उष्ण

कटिबंधों की ओर, आकाश में दक्षिणी क्रॉस के साथ, - कलवारी का क्रॉस, जो मानव समाज को पवित्र एकता में बाँधता है; पश्चिम की ओर, प्रेम के स्वर्णिम तट और सद्भाव के शांत सागर की भव्य प्राप्ति की ओर।

यह स्वर्गीय नगर, जो धार्मिकता के सूर्य से प्रकाशित है - यह नया यरूशलेम, यह अनंत सबकुछ, जो हमें दूरस्थता के कोहरे में छिपा हुआ प्रतीत होता है - सेंट जॉन की दृष्टि में तब आया जब वह मनुष्यों के साथ निवास कर रहा था।

## 8. 576: 18-25

वास्तविक मनुष्य की निराकारता के विषय में हमें इससे अधिक और क्या संकेत चाहिए कि यूहन्ना ने स्वर्ग और पृथ्वी को बिना "मंदिर [शरीर] के देखा"? ईश्वर का यह राज्य "आपके भीतर है," - यहाँ मनुष्य की चेतना की पहुंच के भीतर है, और आध्यात्मिक विचार इसे प्रकट करता है। दैवीय विज्ञान में, मनुष्य ईश्वर के बारे में अपनी समझ के अनुपात में सचेत रूप से सद्भाव की यह पहचान रखता है।

## 9. 577: 12-27

इस आध्यात्मिक, पवित्र निवास की कोई सीमा या सीमा नहीं है, लेकिन इसके चार प्रमुख बिंदु हैं: पहला, जीवन, सत्य और प्रेम का वचन; दूसरा, मसीह, ईश्वर का आध्यात्मिक विचार; तीसरा, ईसाई धर्म, जो ईसाई इतिहास में मसीह-विचार के दिव्य सिद्धांत का परिणाम है; चौथा, ईसाई विज्ञान, जो आज और हमेशा के लिए इस महान उदाहरण और महान आदर्श की व्याख्या करता है। हमारे ईश्वर के इस शहर को सूर्य या उपग्रह की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि प्रेम इसकी रोशनी है, और दिव्य मन इसका अपना व्याख्याता है। जो भी बचाए गए हैं उन्हें इस प्रकाश में चलना चाहिए। शक्तिशाली शक्तिशाली और राजवंश स्वर्गीय शहर के भीतर अपना सम्मान स्थापित करेंगे। इसके द्वार भीतर और बाहर दोनों ओर प्रकाश और महिमा की ओर खुलते हैं, क्योंकि सब कुछ अच्छा है, और कोई भी उस शहर में प्रवेश नहीं कर सकता, जो "अपवित्र है, ... या जो झूठ बोलता है।"

## 10. 339: 20 (जैसा)-25

जैसा कि मूर्तिपूजक रोम की पौराणिक कथाओं में देवता के एक अधिक आध्यात्मिक विचार की उपज है, तो क्या हमारे भौतिक सिद्धांत आध्यात्मिक विचारों तक उपजेंगे, जब तक परिमित अनंत, बीमारी को स्वास्थ्य नहीं देता, पवित्रता को पाप, और परमेश्वर का राज्य आता है, "जैसा कि यह स्वर्ग में है।"

## 11. 16: 30-31

तेरा राज्य आये.

तेरा राज्य आ गया; तू हमेशा मौजूद है।

## दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

### दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

### उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषा, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

### कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6